Sixteenth Loksabha

an>

Title: Observation by Hon. Speaker regarding Commemoration of 75th anniversary of Quit India Movement.

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, आज 9 अगस्त है। आज 'भारत छोड़ो' आंदोलन के 75 वां पूरे हो गए हैं। यह हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण अवसर है। इसलिए मुझे लगता है कि जैसे हम साधारणतः पहले प्रश्नकाल चलाते हैं, लेकिन इस 75 वाँ की भावना के कारण आज हम प्रश्नकाल न चलाते हुए, इस दिन पर सभी की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इस दिन को एक स्पेशल ओकेज़न के तौर पर इस समय को निर्धारित कर के इस पर चर्चा शुरू करते हैं।

माननीय अध्यक्ष : भारत की आज़ादी के 70 वां पूर्ण होने पर एवं स्वतंत्रता संघा के सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव "भारत छोड़ो आंदोलन " के 75 वां पूर्ण होने पर उन क्षणों को सभा के सभी सदस्य एवं समस्त देशवासियों के साथ पुनः स्मरण करते हुए मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है। हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सन् 1942 में इसी दिन राट्रपिता महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक "भारत छोड़ो आंदोलन " शुरू करने का आह्वान करते हुए, भारत से अंग्रेजों की सुव्यवस्थित वापसी की मांग की, जिसने विदेशी हुकूमत की नींव हिला दी। जिसके कारण हम विदेशी शासन से अपनी मातृभूमि को आज़ाद करा सके। यद्यपि भारत छोड़ो आंदोलन स्वतंत्रता से पूर्व अंतिम आंदोलन था, पर भारत में स्वतंत्रता के लिए किए गए आंदोलनों का इतिहास बहुत लम्बा है। यह सच है, एक समय भारत में ब्रिटिशों की हुकूमत हो गयी थी, पर इससे बड़ा सच यह है कि पहले दिन से ही जहां-जहां भी यानी जैसे ही अंग्रेजों की यह मानसिकता भारतीयों की समझ में आयी वहां-वहां भारत को स्वतंत्र कराने के प्रयास भी तुरन्त आरम्भ हो गए थे। जहां ब्रिटिश अपनी औपनिवेशिक सत्ता का आनंद ले रहे थे, वहीं स्थानीय शासक, किसान, बुद्धिजीवी, आम जनता एवं विभिन्न राज्यों के सैनिकों के मन में स्वराज्य की भावना उमड़ रही थी। जगह-जगह विदेशी शासन के ख़िलाफ़ विभिन्न रूपों में जनआक्रोश झलकता था। इस परचक्र के ख़िलाफ़ सत्त आक्रोश फूट रहा था। इसमें ओडिशा का पाइक विद्रोह, वे स्वाधीनता की मशाल बनने के लिए आतुर थे। दक्षिण भारत में धीरन चिन्नमलई, कट्टबोमन और झारखण्ड के संथाल विद्रोह के बारे में भी सभी ने सुना है। रामसिंह कूका भी उन्हीं में से एक स्वतंत्रता आंदोलनकारी थे। महान स्वतंत्रता सेनानियों को सब लोग जानते थे, परन्तु ऐसे अनेक स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं, जिनके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। कर्नाटक के किट्टूर की रानी चेन्नमा हो, श्यामजी कृण वर्मा हो, पूर्ववर्ती बंगाल की मतंगिनी हाजरा हो, नागालैण्ड की रानी गैडिनलियू हो और कितने ही ऐसे नाम या मैं कहूं वासुदेव बलवंत फड़के, महाराट्र का एक सामान्य मजदूर बाबू गेनू, ऐसे कई नाम हैं, ऐसे लोग हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, लेकिन गुमनाम रहे। महाराट्र में बाल गंगाधर तिलक का घोा वाक्य "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूंगा "। वहां से जो शुरूआत होती है तो गांधी जी का जो कथन था- "Let every Indian consider himself to be a free man." यह भावना उन्होंने अगस्त क्रांति के समय व्यक्त की थी। इस सब से यह बात समझ में आती है कि किस तरह से जगह-जगह हो रहे छोटे-छोटे आंदोलनों को समेट कर राट्रव्यापी आह्वान

सन् 1942 में हुआ। भारत छोड़ो आंदोलन में करेंगे या मरेंगे का नारा देकर स्वतंत्रता की इस लड़ाई को गति दी थी। यह एक ऐसा आंदोलन था, जब अंग्रेजों को यह एहसास हो गया कि अब भारत में राज करना सम्भव नहीं है। मैं पटना के सचिवालय में तिरंगा फहराने वाले उन वीर शहीदों के साहस, आत्मत्याग और बलिदान का स्मरण करते हुए अत्यंत अभिभूत हूं, जिन्होंने ब्रिटिश पुलिस की गोलियों की परवाह न करते हुए सचिवालय पर तिरंगा फहराकर भारत की स्वतंत्रता की पूर्व उद्घोाणा कर दी। ऐसी ही साहसिक घटनाएं देश के अन्य शहरों मुंगेर हो, मुर्शिदाबाद हो, सतारा हो, बलिया हो, ऐसे अनेक छोटे शहरों और इलाकों ने अपने आपको ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र घोाित कर दिया था।

8 अगस्त, 1942 की देर शाम मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान की बैठक में भारत छोड़ो आंदोलन प्रस्ताव पेश हुआ। उसी रात्रि को अंग्रेजों भारत छोड़ो के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से मुहर लग गई। 90 मिनट के अपने भााण में महात्मा गांधी जी ने स्पट कर दिया था कि करेंगे या मरेंगे। ब्रिटिश सरकार ने आधी रात में एक के बाद एक धरपकड़ शुरू कर दी। व्यापक गिरफ्तारियों से राट्र हतप्रभ जरूर हुआ, लेकिन मृत नहीं हुआ, भावना जीवित थी। भारत छोड़ो आंदोलन की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि इस आंदोलन ने देश के बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ गाँव-देहात के करोड़ों किसान, मजदूर और नौजवानों की चेतना को झकझोरा एवं उनको प्रत्यक्ष रूप से इस स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा था।

आज हम भारत छोड़ो आंदोलन में शहीद हुए उन बेनाम वीरों को श्रद्धांजलि देते हैं, जिनके हृदय में देशभक्ति, उसकी भा वना, सदा सर्वदा प्रज्ज्वलित होने वाली मशाल उनके मन में जलती थी और जिनकी आंखों में स्वतंत्र नवभारत के सपने थे। उन वीरों, महापुरुाों, संत आत्माओं के दृटिकोण को समझने, अपनाने एवं उनके प्रचार-प्रसार करने का पुनित कर्तव्य हम सभी का है, क्योंकि यह जो भाव है, मैं मानती हूं कि कई नाम ऐसे निकलेंगे। आज हम-आप यहां बैठे हैं और चर्चा करेंगे। आप अगर अपने घर में दादी-नानी से कथाएं सुनें, दादा जी से कथा सुनें, ताऊ जी से कुछ पूछें या अपने गांव में जाकर चर्चा करेंगे तो पता चलेगा कि हर घर से कुछ न कुछ बलिदान हुआ है। हो सकता है कि किसी ने क्रांतिकारियों को बचाने के लिए अपना घर बेच दिया हो, बलिदान न दिया हो, मगर अपना घर बेच दिया, सर्वस्व समर्पण कर दिया। गांधी जी की कथा मैंने सुनी है कि उनके प्रवचन जब अंत में झोली घूमती थी तो महिलाएं तुरंत अपने गले में पड़ी चेन को उतार कर उस झोली में डालती थीं, वे सोचती नहीं थीं। यह भी एक प्रकार से सर्वस्व का दान सामान्य से सामान्य व्यक्ति ने उस समय किया है। एक प्रकार से हर घर में ये भाव उस समय थे। यह होता था। मैं तो कहूंगी कि उस समय ही होता था, ऐसा नहीं है। आज भी है, हमें जगाना पड़ेगा। क्योंकि मैंने अपनी आंखों से देखा है। मैं आपको एक बात बताना चाहूंगी कि यह तो मैंने उस समय सुना कि एक महिला को जब कहा गया कि उस समय केसरी पर प्रतिबंध था। मैं एक भाव बताती हूं। केसरी पर प्रतिबंध था। मेरे गांव में ही चर्चा थी। मुझे ही दादी-नानी ने कहा कि केसरी पर प्रतिबंध लग गया। अब केसरी घर पर कैसे आएगा। महाराट्र के लोगों को भी मालूम है कि केसरी पढ़ना घर-घर में एक ऐसा भाव था। क्योंकि उसमें जो लिखा जाता था, उमसें भा व था। अग्रलेख लिखते समय लोकमान्य तिलक को यह संदेशा आया कि आपके पुत्र की मृत्यु हो गई है। अग्रलेख लिखते समय इधर से उधर न देखते हुए उन्होंने एक ही वाक्य बोला था कि चलो "स्वतंत्रता संग्राम के इस होम मेरे घर का एक कंडा समर्पित हो गया" गोहरी शब्द का था एक कंडा। यह भाव से लिखा जाता था। इसलिए मुझे मालूम है कि जब ब्रिटिश शासन ने केसरी पर प्रतिबंध लगाया कि उसे कोई नहीं पढ़ेगा, तब एक घर में चर्चा चल रही थी। वह आज के शासकीय नौकरशाहों को भी समझना चाहिए। यह हुआ कि मैं तो शासकीय नौकर हूं, सर्विस करता हूं, मध्यम वर्ग का व्यक्ति हूं और घर में चर्चा शुरू हो गई कि अब क्या करेंगे। कैसे केसरी लगाएंगे, कैसे पढ़ेंगे और लगाना है यह ही नहीं, खरीदना है। क्योंकि वह भी एक प्रकार से मदद है, फ्री में नहीं लेना है। उस वक्त जब यह चर्चा शुरू हो गई तो घर में जो महिला थी, उसने कहा कि इसमें क्या बात है। आप अपने नाम से केसरी मत लीजिए, मेरे नाम से तो केसरी आ ही सकता है। घर में दूसरी बात शुरू हो गई कि आप तो पढ़ी-लिखी नहीं हो। उन्होंने जवाब दिया कि तो क्या हुआ, आप पढ़कर सुना दीजिए। किंतु मेरे नाम से इस घर में केसरी आएगा। घर-घर में यह भाव था। लेकिन आज यह भाव मरा भी नहीं है। मैं दूसरी बात जो आपसे कहना चाहूंगी, थोड़ी विस्तार में जरूर है। यह भाव मरा नहीं है।

मैं आपको अपनी आंखों देखी बताती हूं, स्वातंत्र्य वीर सावरकर, किसी-किसी के द्वारा उन पर भी प्रश्नचिह्न लगते हैं। मगर जो भाव है, उन्होंने एक प्रकार से सर्वस्व होम किया था। परंतु स्वातंत्र्य वीर सावरकर पर जब सिनेमा बन रहा था, सुधीर फड़के का नाम हम बहुत लोग जानते हैं, वह सिनेमा बना रहे थे और उसके लिए वह गांव-गांव जाकर पैसा एकत्रित कर रहे थे। उनके मन में भाव था कि स्वातंत्र्य वीर की कहानी मुझे देश के सामने लानी है। मैं अपनी आंखों देखी बताती हूं, हमारे इंदौर में भी वह आये थे और वहां उन्होंने सभा भी की। उनका कार्यक्रम हुआ और कार्यक्रम के बाद उन्होंने कहा कि मैं वीर सावरकर पर सिनेमा बनाना चाहता हूं, पिक्चर बनाना चाहता हूं। मैं गांव-गांव जा रहा हूं, धन संग्रह कर रहा हूं और आप जो भी कुछ मुझे दे सकें, दे दें। जो दे सकते थे, हरेक ने कुछ न कुछ डिक्लेयर किया, किसी ने चैक दिया, किसी ने कुछ दिया। एक सामान्य घर की महिला उस समय वहां आई, मैं देखती रह गई कि यह क्या करेगी। उसने कहा मेरे यहां बैंक अकाउंट में बहुत कुछ तो नहीं है, मगर यह एक-एक सोने की चूड़ी बस मेरे पास है और वह उन्होंने झोली में डाल दी कि मेरी तरफ से सावरकरजी का सिनेमा बनाइये। क्योंकि मैं मानती हूं और जानती हूं कि वह क्या थे। यह भाव तो आज भी है, बस इसे जाग्रत करने की आवश्यकता है। जिस जोश, साहस, संकल्प, आस्था, दृढ़निश्चय और आत्मविश वास के साथ हमने आजादी पाई थी, उन्हीं गुणों को पुनः आत्मसात करके हम अपने सपनों का सर्वश्रेठ, सर्वोत्तम, उत्कृट, सशक्त, समृद्ध एवं विश्वस्तरीय भारत बना सकते हैं।

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने उस समय कहा था - अंग्रेजो भारत छोड़ो। मेरे मन में आज एक भाव है, आज जब हम सब लोग यहां बैठे हैं, हम एक प्रकार से जनप्रतिनिधि हैं। हम लाख-लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुझे याद है कि छत्रपति शिवाजी के लिए एक वाक्य बोला गया था, एक सेनानी ने कहा था कि आप लड़ाई पर नहीं जाओगे, क्यों नहीं जाओगे, आप आगे नहीं जाओगे। एक बहुत प्रसिद्ध वाक्य उन्होंने मराठी में कहा था - लाख मेलेतरी चालतील लाखाच्या पोशिंदा मरून चालणार नाहीं। यानी लाखों लोग मरे तो चलेगा, लेकिन महाराज आप लाखों लोगों को पोाण देने वाले हो। वह पोाण यानी कोई अन्न प्रदान करना नहीं, मगर एक मानसिक पोाण भी होता है। हम सब लोग लाख-लाख लोगों के जनप्रतिनिधि हैं, हमें जाग्रत रहना है। मुझे आज ऐसा लगता है कि तब हमने कहा था - अंग्रेजो भारत छोड़ो, परंतु अब हमें भारत जोड़ो आंदोलन की जरूरत है। एक ऐसा आंदोलन जो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश के सभी हिस्सों में चलाया जाए, ताकि हम एक सबल और संगठित भारत का निर्माण कर सकें। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था, जिसमें समावेशी विकास हो, हमें विकास के लाभों को देश के सभी भागों तक पहुंचाना है और अभाव को दूर करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। महात्मा गांधी जी ने उस समय कहा था कि निर्धनतम वर्ग की ओर सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए। जिसे एक प्रकार से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने दोहराया था - पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना और विकास पहुंचाना, यह अंत्योदय की कल्पना की थी।

मैं आप सबसे इतना ही कहना चाहूंगी कि आज हम यहां विचार करेंगे, हम यहां अपनी-अपनी बात रखेंगे, परंतु हम सब लोग उसमें यह भाव रखें कि राट्र के लिए कुछ बोल रहे हैं। एक दिन यह सब कुछ उन्नत होकर, हम अपने आपको उन्नत करेंगे, अपने विचारों को उन्नत करेंगे तो ही हम लाखों के प्रतिनिधि कहलाने लायक रहेंगे। इसलिए मैं इतना ही कहूंगी कि आज एक बात ध्यान रखें कि लोकमान्य तिलक ने उस समय कहा था - स्वराज्य माझ्या जन्मसिद्ध अधिकार आहेत, तो मी मिडवीनच। स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूंगा। आज हमें एक बात सोचनी आवश्यक हो गई है और हम सब सोचें कि सुराज मेरा परम कर्तव्य है और मैं उसे पूरा करूंगा ही। इस भावना के साथ मैं आप सबसे निवेदन करूंगी कि हम अपने-अपने विचार इस विाय पर रखें।

उसके बाद सबसे आखिर में, मुझे मालूम है कि कुछ लोगों के मन में भाव है, आज एक ऐसी घटना भी हो गई है, मगर मैं वह महिला गृहिणी के नाते आप को कहती हूँ कि कई बार हमने यह भी देखा है कि घर की गृहिणी कहती है कि सब दुखों को एक साथ बाजू में रखो, अभी बाजू में रखो और उस दुख को बाजू में रख कर के अपने पूरे कुटुम्ब का विचार करो अगर कुछ आवश्यक है। मैं आज वही कहूंगी कि पूरे राट्र का विचार हमें पहले करना है। अपना दुख अपने पास है, हमारी इस चर्चा के बाद उसको व्यक्त करेंगे ही तो हम आज राट्र के लिए एक प्रकार का एक संकल्प लेंगे। आज हम 75वीं वर्गांठ मना रहे हैं। अंग्रेजों को

हमने कहा था कि भारत छोड़ो, मगर किसलिए कहा, स्वतंत्रता तो मिली पांच साल बाद, सन् 1947 में तो आने वाले पांच साल में हम क्या कर रहे हैं। जब स्वतंत्रता की वह 75वीं वर्गांठ आएगी, इसके लिए संकल्प करना पड़ेगा। मैं चर्चा के लिए आप सबको आमंत्रित करती हूँ।

-

-